Date - 18/07/2020

Dr. Sanehlata
Asst. Professor (Guest faculty)
Dept. of Philosophy
Women's College, Samastipur
Email Id. - Snehababli 1987 @ gmail.com
Cont. no. - 8409587640

Class - B.A. - II (Hons.)

Topic - Descartes - "cogito ergo sum" theory - II

Scanned with CamScanner

स्पष्टता और परिस्पष्टता दो प्रकार के है।

1) मनोवैज्ञानिक
2) तार्किक

उपरोक्त उदाहरणों में स्पष्टता और परिस्पष्टता मनोवैज्ञानिक है, तार्किक नहीं। तार्किक स्पष्टता वह होती है, जिसके व्याघातक के सत्य होने की कल्पना भी नहीं कि जा सके। जैसे - यदि हम दो और दो का कर्ल समझे तो यह चार होते है किन्तु हो सकता है कि दो और दो मिलकर पाँच होते है और हमारे दिमाग की रचना इस तरह हुई है कि वह दो और दो को चार के रूप में ग्रहण करता है। देकार्त ने स्वयं स्पष्टता की कसौटी की व्याख्या नहीं कि है। जो कुछ भी उन्होंने इस विषय में कहा है, उससे बोध होता है कि स्पष्टता को उन्होंने तार्किक स्पष्टता के रूप में ही लिया है।

देकार्त के निम्नलिखित उदाहरण से साफ होता है कि - "मैं उसी को स्पष्ट प्रत्यक्ष मानता हूँ जो ध्यान देने वाले मन के सामने उपस्थित एवं उन्मुक्त हो, उसी प्रकार हम कहते है कि आँखों के सम्मुख उपस्थित चीजें स्पष्ट दिखाई देती है क्योंकि वे आँखों को पर्याप्त रूप और से परिचालित (उत्तेजित) करती है। किन्तु केवल वही परिस्पष्ट होता है जो अत्र स्पष्ट ही तथा इतना निश्चित एवं अन्य पदार्थों से पृथक हो कि उसमें स्पष्टता के अलावे अन्य कुछ भी परिलक्षित न हो।"

देकार्त की व्याख्या पूर्णतः तार्किक नहीं है, किन्तु उनका अभिप्राय तार्किक स्पष्टता ही है। स्पष्टता को उन्होंने मनोवैज्ञानिक माध्यम से ही व्यक्त किया है। इसका स्पष्टीकरण संभवतः यह

Scanned with CamScanner

चिंतन क्रिया, या चिंतन, चेतन प्रक्रिया है।

Cogito ergo sum से यह स्पष्ट होता है कि डेकार्त की विधि आगमनात्मक एवं निगमनात्मक होती है। यह आगमनात्मक विधि इसलिए है कि इस विधि से 'सत्य' की खोज सफलीभूत हुई। इस विधि द्वारा स्पष्ट और परिस्पष्ट अन्तःप्रज्ञा की स्थापना की। यह निगमनात्मक विधी इसलिए है कि डेकार्त के दर्शन के अन्य तत्व इसी सिद्धांत से निगमित होती है।

आलोचना :

i) डेकार्त का आत्मसंबंधी वाक्य एक मान्यता के रूप में व्यवहृत हुआ है। जिसे डेकार्त सिद्ध करना चाहते है उसे आंत में वे मान लेते है, कि यह उचित नहीं है।

ii) कुछ लोगो की दृष्टि में डेकार्त के इस कथन में (मैं सोचता हूँ, इसलिए मैं हूँ) कोई नवीनता नहीं है। आधार-वाक्य 'मैं सोचता हूँ' और निगमन 'मैं हूँ' में कोई ही क्या है? ~~इसलिए~~ इसके विचार में इस कथन में सिद्ध-साधन दोष है।

iii) कांट का कहना है कि 'मैं सोचता हूँ' इसलिए 'मैं हूँ' के तर्क में जिस 'मैं' को डेकार्त प्रमाणित करता है वह तर्क का 'मैं' है, अर्थात इससे यह प्रमाणित होता है कि तर्क का विषय 'मैं हूँ' किन्तु वास्तविक रूप से उस 'मैं' की कोई वास्तविक सत्ता सिद्ध नहीं होती।

iv) डेकार्त तर्क को दोहरा देकर चुपचाप इस तर्क के कोरे काल्पनिक 'मैं' को अर्थात अस्तित्व की सौंप देता है। यह असंगत एवं तर्क विरुद्ध बात है।

कांट की आलोचना न्यायोचित नहीं है डेकार्त स्वयं 'चिंतन' पर किए गए आरोपो के उत्तर में कहते है कि 'Cogito ergo sum' न्यायवाक्य नहीं है, यह तो अंतः दृष्टि या सहज प्रत्यय है।

Scanned with CamScanner